International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 7 Issue 10 Ver. I||October 2018 || PP 72-74

सातवाहनों की धार्मिक सहिष्णुता

डा. लता व्यास
व्याख्याता
चौधरी बल्लू राम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय श्री गंगानगर

सिमुख : कण्व वंश के अन्तिम राजा सुशर्मा की हत्या जिस व्यक्ति ने कि वह आन्ध्रजातीय सिन्धुक था। जिन्हें इतिहास में सातवाहनों के नाम से जाना जाता है। इसी सिन्धुक ने सातवाहन वंश की स्थापना की थी।

वायु पुराण का कथन है कि आन्ध्रजातीय सिन्धुक काण्वायन सुशर्मा एवं शुंगों की अवशिष्ट शक्ति को नष्ट कर राज्य प्राप्त करेगा।[4] वायु पुराण के अनुसार सातवाहन वंश में 19 राजा हुए और उन्होंने लगभग 3 शताब्दियों तक राज्य किया। इसके विरुद्ध मत्स्य पुराण 30 सातवाहन राजाओं का उल्लेख करता है। जिन्होंने लगभग 4 शताब्दियों तक राज्य किया था। पुराणों में सिन्धुक को भृत्य भी कहा

गया है अतः अनुमान होता है कि स्वतन्त्र राजा होने से पूर्व यह सामन्त शासक रहा होगा।

सिन्धुक या सातवाहन वंश ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था। इस बात के उचित प्रमाण व्याप्त है। सिन्धुक के राज्काल की मुद्रायें प्राप्त हुई है। इससे ऐसा लगता हैं कि उसने स्वतन्त्र शासक बनने पर मुद्राओं का प्रचलन किया था। इसकी मुद्राओं से इसकी धार्मिक सहिष्णुता का पता तो नहीं चलता लेकिन मुद्राएँ उसके बारे में बहुत कुछ जानकारी देती हैं।

जैन अनुश्रुतियों के अनुसार उसने जैन मन्दिरों और बौद्ध चैत्यों का निर्माण करवाया था। जैन कथानकों के अनुसार सिमुख अपने शासन काल के अन्तिम वर्षों में दुष्ट एवं क्रूर हो गया था। और जैनों की अपेक्षा बौद्धों से अधिक उदार व्यवहार करने लगा था।

इन अनुश्रुतियों से उसकी धार्मिक सहिष्णुता को बल मिलता है। पुराणों के अनुसार इसने 23 वर्षों तक राज्य किया, डॉ0 राय चौधरी इसके शासन को 60 ई0 पू0 तक मानते है।

सिमुख के बाद कृष्ण सातवाहनों का राजा हुआ कृष्ण को कुछ विद्वान सिमुख का भाई कहते हैं। तो कुछ विद्वान सिमुख का पुत्र बताते हैं। पुराणों के अनुसार कृष्ण सिमुख का भाई एवं उत्तराधिकारी था। डॉ0 दिनेश चन्द्र सरकार का मत है कि कृष्ण सिमुख का पुत्र था। कुछ भी हो पर इतना तो सत्य हैं कि कृष्ण सिमुख का उत्तराधिकारी था।

शातकर्णि प्रथम में धार्मिक सहिष्णुता– कृष्ण सातवाहन की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र शातकर्णि प्रथम राजा हुआ सभी पुराण इस बात का वर्णन करते है। नागनिका शातकर्णि की रानी थी और अंगीय वंश की थी। ये अंगीय वंश के राजा अपने को महारथी कहते थे। कर्नाटक में उनके कुछ सिक्के मिले हैं। नागनिका के नानाघाट अभिलेख में शातकर्णि को बहुत सी उपाधियाँ दी गयी हैं। इसी अभिलेख से पता चलता है कि शातकर्णि ने दो अश्वमेघ यज्ञ किये थे। शातकर्णि ने इस अवसर पर ब्राह्मणों और सुपात्रों को गायों, घोडों, हाथियों, सुवर्ण और वस्तुओं का दान दिया था।

लेख के प्रारम्भ में वैदिक देवमण्डल को प्रणाम एवं नमस्कार किया गया है। जिसमें कहा गया है कि सिद्धम धर्म को नमस्कार है। सकर्षण, वासुदेव, महिमावान, चन्द्र सूर्य, चारो लोकपालों, यम, वरुण, कुबेर, वासुदेव को नमस्कार है। इन सभी साक्ष्यों से यह तो निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता है कि नागनिका और उसका पति ब्राह्मण धर्म के प्रबल समर्थक एवं अनुयायी थे।

लेकिन ऐसा नहीं है कि हमारे पास ब्राह्मण धर्म से सम्बन्धित पुरातात्विक साक्ष्य ही है बल्कि बौद्ध धर्म से सम्बन्धित साक्ष्य भी हैं। जिससे शातकर्णि प्रथम की सहिष्णुता सिद्ध हो जाती है। यह लेख साँची स्तूप के दक्षिणी तोरणद्वार पर उत्कीर्ण है।

इसमें शातकर्णि के राज्य में शिल्पियों के प्रधान वशिष्ठी पुत्र आनन्द द्वारा दिये गये दान का उल्लेख है। यह दान बौद्ध विहारों एवं भिक्षुओं को दिया गया था। अगर शातकर्णि में सहिष्णुता ना होती तो वह अपने राज्य में अपने कर्मचारी को कभी ऐसा नहीं करने देता अतः शातकर्णि एक धर्म सहिष्णु शासक था। पुराणों में वर्णित वंशानुक्रम के अनुसार शातकर्णि का उत्तराधिकारी पूर्णोत्संग था। लेकिन शातकर्णि की मृत्यु के पश्चात कोई ऐसा पराक्रमी शासक नहीं

हुआ जो उसके साम्राज्य का विस्तार करता और अन्य व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से चलाता। नागनिका के शासन के अन्त से लेकर गौतमी पुत्र शातकर्णि के राज्यारोहण के बीच के अन्तराल का सातवाहन राजवंश का इतिहास स्पष्ट एवं अन्धकारमय है।

इन सब शासकों के बारे में बहुत कम जानकारी है। अतः इनकी सहिष्णुता के बारे में भी बहुत कम जानकारी है। लेकिन ये सभी शासक अपने पूर्वजों की भाँति ब्राह्मण धर्म के अनुयायी रहे होंगे क्योंकि हाल ने गाथासप्तसती नामक देवी ग्रन्थ की रचना की थी। शातकर्णि की मृत्यु के बाद सातवाहनों का इतिहास अन्धकारपूर्ण है। लेकिन कुछ समय पश्चात सातवाहन शक्ति का पुनरूद्धार गौतमी शातकर्णि नामक शासक ने किया। पुराणों के अनुसार यह सातवाहन वंश का तीसरा राजा था।

गौतमीपुत्र शातकर्णि में धार्मिक सहिष्णुता–

ब्राह्मण धर्म– गौतमी पुत्र शातकर्णि ने सातवाहनों की खोई हुई प्रतिष्ठा को स्थापित किया था। उसके पिता का नाम शिवस्वाति और माता का नाम बलश्री था। वह सातवाहन वंश का सबसे बड़ा और पराक्रमी राजा था। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उसने सातवाहन राजाओं में सर्वप्रथम मातृ–परक नाम धारण किया था।

वह ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था। इसीलिए अभिलेख में उसे एक ब्राह्मण कहा गया है, किन्तु धार्मिक उदारता भी उसकी विशेषता थी। जब शकों से गौतमीपुत्र ने इस क्षेत्र को छीना तो उसने प्रतिद्वन्द्वी शकों द्वारा दिये गये दान को जारी रखा।[3]

हिन्दूधर्म में बताये गये मानव जीवन के तीनों लक्ष्यों धर्म, अर्थ, काम के प्रति वह जागरुक रहता था। और इनको पाने के लिए वह अपने समय का समुचित प्रयोग करना जानता था।

बौद्ध धर्म–

उत्तर काल के गुफा मन्दिर, एवं मठ भारत के अनेक भागों में पाये जाते है। परन्तु पश्चिम दक्षिण में सातवाहन साम्राज्य और उत्तराधिकारियों के समय में सबसे अधिक कृत्रिम बौद्ध गुफाएं खोदी गयीं।

गौतमी पुत्र शातकर्णि ने करवड़ी नामक ग्राम का दान त्रिरश्मि पर्वत पर रहने वाले भिक्षुओं को किया था। गौतमी पुत्र शातकर्णि द्वारा महासांघिक संघ के लिए करजक नामक ग्राम का भी दान दिये जाने का उल्लेख प्राप्त होता है। गौतमी पुत्र शातकर्णि की माता गौतमी बलश्री ने भद्रायणी शाखा के भिक्षु संघ को एक गुहा तथा पिसाची पद्रक गाँव का दान दिया था।

पुलमावि के बाद उत्तराधिकारियों की धार्मिक नीति :–

पुलमावि के बाद शिव श्री शातकर्णि एवं शिव स्कन्द शातकर्णि ने राज्य किया। ये भी ब्राह्मण धर्मानुयायी थे क्योंकि उनके नामो में शिव का पाया जाना शिव शंकर से प्रभावित दिखता है। इनमें भी सहिष्णुता रही होगी। शातवाहनों का अन्तिम प्रतापी राजा गौतमी यज्ञ श्री शातकर्णि हुआ अन्य सातवाहन शासकों की भाँति यज्ञ श्री ने भी वौदिक यज्ञ सम्पन्न किये। उसके शासन के 27 वें वर्ष के चिन्नगंजम लेख में उसे महायाजिन की उपाधि दी गई है। यज्ञ श्री शातकर्णी के कुछ सिक्कों में घोड़े की आकृति अंकित है इस पर सुझाव दिया गया है कि उसने सम्भवतः अश्वमेघ यज्ञ किया होगा।

खारवेल का धार्मिक दृष्टिकोण :

हाथी गुफा अभिलेख के अनुसार खारवेल चेदि वंश का था। यह सूर्यवंशी राजर्षि वसु का वंशज था। महामेघवाहन इस वंश का सर्वप्रमुख ऐतिहासिक राजा प्रतीत होता है। जिसके बारे में जानकारी का मुख्य आधार हाथी गुफा अभिलेख है। 15वें वर्ष में खारवेल युवराज हुआ।

खारवेल एक जैन धर्मानुयायी नरेश था क्योंकि इस विषय पर हमारे पास बहुत से प्रमाण उपलब्ध हैं। खारवेल के हाथी गुफा अभिलेख का नमों अरहतानं से शुरू होना इसका प्रबल प्रमाण है।

खारवेल के हाथी गुफा अभिलेख में उसे उपासक भी कहा गया है। अभिलेख का मूल आधार इस प्रकार है – तेरहवें वर्ष में सुप्रवर्तित होने पर जीर्ण आश्रय वाले धर्मोपदेशक अर्हतों के कार्य विश्राम हेतु राजपुष्ट व्रतों का आचरण करने वाले वर्षाक्षिषों की पूजा में अनुरक्त ''उपासक'' श्री खारवेल द्वारा कुमारी पर्वत में आश्रय गुहायें खुदवायी गयीं।

खारवेल ने चौथे वर्ष पुनः पश्चिम दिशा पर आक्रमण किया। हाथी गुफा लेख में इस प्रसंग और प्राचीन कलिंग नृपतियों द्वारा विनिर्मित विद्याधरों के अधिवास और उनके 'वितथ मुकुट' हो जाने की चर्चा है। जगन्नाथ का विचार है कि

विद्याधराधिवास जैनियों का कोई पवित्र स्थान था जिसे खारवेल के पूर्वजों ने स्थापित किया था। गुप्त संवत 113=432 ई0 के मथुरा लेख में जैनियों की विद्याधरी शाखा इस प्रसंग में उल्लेखनीय है। इससे भी खारवेल जैन धर्मानुयायी प्रतीत होता है।

ब्राह्मण धर्म : ऐसा नहीं था कि खारवेल केवल जैन धर्म को ही महत्व देता था बल्कि उसने ब्राहाणों को भी दान दिये थे उसके हाथी गुफा अभिलेख में इस बात के प्रमाण मिलते हैं। वह जैन उपासक होने के साथ–2 अन्य धर्मो के प्रति भी आस्था एवं विश्वास रखता था जो उसके धार्मिक रुप से सहिष्णु होने का परिचायक है। डॉ0 जायसवाल का मत है कि हाथी गुफा अभिलेख में खारवेल द्वारा किये गये राजसूय यज्ञ का उल्लेख है परन्तु बरुआ महोदय ने इसका खण्डन किया है और राजसूय के स्थान पर राजश्रिय (राज समृद्धि) पढ़ा है। अलग जायसवाल के मत को स्वीकार कर लिया जाये तो यह खारवेल की धार्मिक सहिष्णुता ही दिखाता है क्योंकि राजसूय यज्ञ ब्राह्मण धर्म से सम्बंधित है जबकि खारवेल जैन था यह तभी सम्भव था जब उसमें धार्मिक सहिष्णुता हो।

निष्कर्ष : महाजनपद काल में जब ब्राह्मण धर्म अपनी पकड़ बनाये हुए था उस समय बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म ने भी खूब प्रचार प्रसार करके अपने धर्मों की महाजनपदों एवं गणराज्यों में पहुंच बना ली उस समय के प्रसिद्ध राजा बिम्बसार, प्रसेनजित, उदयन प्रद्योत एवं अजातशत्रु आदि ये सभी धर्मों को मानने वाले थे। विनय पिटक से ज्ञात होता है कि बिम्बसार ने बुद्ध के मिलने के बाद बौद्ध धर्म

संदर्भ सूचि

1. हर्षचरित ''अतिस्त्रीप्रसंग रतमनंगपरवशं शुंगममात्यो वसुदेवो
   देवभूति दासी दुहित्रा देवीव्यंजनया वीतजीवितम कारयत''
2. श्याम मनोहर मिश्र, दक्षिण भारत का राजनैतिक इतिहास,
3. श्रीराम गोयल
4. डॉ0 वासुदेव उपाध्याय
5. वी0 वी0 मिरासी